IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"Study of the Art works of Indian Contemporary Installation Artist Hema Upadhyay"

"भारतीय समकालीन अधिष्ठापन कलाकार हेमा उपाध्याय की कलाकृतियों का अध्ययन"

डा0 सुनीता गुप्ता
(शोध निर्देशिका)
प्रोफेसर एण्ड विभागाध्यक्षा
चित्रकला विभाग,
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

धीरज कुमारी
(शोधार्थिनी) (ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग)
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़
डा0 भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय,
आगरा

Abstract :- Installation art is a genre/style that has attractive a lot of attention in the recent previous years. Famous Artist Hema Upadhyay has contributed a lot in the installation art and she has depicted the hustle and bustle of Mumbai in her art works and this has been highlighted by a research study. This research study includes dream a wish, wish a dream, glass house, killing side, loco-foco-motto, the Nymph and the adult and she has also used the landscape and sample surfaces of Mumbai and shown the social and economic inequalities.

The objective of the presented research paper is to "study the art works of Indian contemporary installation artist Hema Upadhyay" and encourage/appreciate her important contribution in installation art.

सारांश :– अधिष्ठापन कला एक ऐसी शैली है, जिसने विगत वर्षों में लोगों का बहुत अधिक ध्यान आकर्षित किया है। अधिष्ठापन कला वर्तमान में काफी प्रचलित है। सुप्रसिद्ध कलाकार हेमा उपाध्याय ने अधिष्ठापन कला में अपना बहुत योगदान दिया है और उन्होंने अपनी कलाकृतियों में मुम्बई की भीड़–भाड़ को दिखाया है, इस बात को उजागर किया गया है। इस शोध अध्ययन के अन्तर्गत – क्तमंउ ंूपेए ूपे ंकतमंउए ळसें भ्वनेमए झपससपदह `पजमए लोको–फोको मोट्टो, जीम छलउची ंदक ।कनसज और मुम्बई के परिदृष्य एवं नमूने सतहों का उपयोग किया है तथा सामाजिक, आर्थिक असमानताओं को दिखाया है।

प्रस्तुत शोध का उद्देष्य भारतीय समकालीन अधिष्ठापन कलाकार हेमा उपाध्याय की कलाकृतियों का अध्ययन करना तथा अधिष्ठापन कला में उनके महत्वपूर्ण योगदान को प्रोत्साहित करना है।

Key Words :- Mumbai, Nostalgia, Workers, Beauty, Social and Political, Acrylic.

मुख्य शब्द :– मुम्बई, विषाद, श्रमिक, सौन्दर्य, सामाजिक एवं राजनीतिक, एक्रेलिक।

प्रस्तावना :

कलाकार हेमा उपाध्याय का जन्म 1972 ई0 में बडौदा में हुआ था, इन्होंने मुम्बई में रहकर अपने संस्थापन कार्य किये। उपाध्याय के संस्थापन कार्यों में अव्यवस्था, व्यक्तिगत पहचान, विषाद और लिंग के अर्थों को देखा जा सकता है। अपने कला अर्थों के दिखाने के लिये वह स्वयं के निवास के पारिवारिक एवं व्यक्तिगत इतिहास को दिखाती है। उपाध्याय अपने कार्यों में शहर एवं मलिन बस्तियों को दर्शाती हैं।

हेमा उपाध्याय के कार्यों में विशेषतय हिंसा एवं सौन्दर्य एक साथ देखने को मिलता है। उपाध्याय ने अपने कार्यों में मुम्बई के परिदृश्य एवं नमूने सतहों का बार–बार उपयोग किया है, जिसमें उन्होंने सामाजिक आर्थिक असमानताओं को अभिव्यक्त किया है। उपाध्याय पारंपरिक वस्त्र डिजाइन एवं भारतीय आध्यात्मिक शास्त्र से प्रभावित थी। इनके ऐसे कार्यों में शहर में विकास के साथ–साथ उसके नकारात्मक परिणाम को भी देखा जा सकता है।

हेमा उपाध्याय एक कला–प्रतिभाशाली थी, उन्हें किसी अतिश्योक्ति की आवश्यकता नहीं है। अपनी विशिष्ट शैली, समकालीन कला के प्रति समर्पण और कला क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने के अपने प्रयास के कारण उन्हें भारतीय कला जगत के इतिहास में एक सुरक्षित स्थान प्राप्त है। एक नवोन्मेषी कलाकार के रूप में उन्होंने कला जगत में अपनी विशेष छाप छोड़ी है। वह निःसंदेह युवा कलाकारों और कला प्रेमियों के लिए प्रेरणा का एक शाश्वत स्त्रोत रही हैं। राष्ट्र को उनकी उपलब्धियों पर गर्व है उनका जीवन व कार्य समकालीनों के लिए प्रकाश स्तंभ है और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक सितारा है। उनके जीवन की कहानी की एक झलक हमें उनके अंदर के कलाकार की महानता और उनकी रचना की विशालता को देखने में सक्षम बनाती है। कला की दुनिया में अपने असाधारण योगदान के लिए प्रशंसा अर्जित करते हुए उन्हें न केवल राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय राज्य व सार्वजनिक पुरस्कार प्राप्त हुए है; बल्कि देश के हर कोने में सार्वभौमिक प्रेम और मान्यता भी मिली है उनके जैसी प्रतिमाऐं हर दिन पैदा नहीं होती हैं।

लोके–फोको मोट्टो –

प्रस्तुत कृति को कलाकार उपाध्याय ने करांची के टेक्सटाइल रेजीडेन्सी में सन् 2007 में प्रस्तुत किया जो भारत और पाकिस्तान के बंटवारे की याद दिलाता है। इसी कृति में कलाकार ने परिवारिक इतिहास को दिखाया है जो कि इस विभाजन में शामिल था। इस अधिष्ठापन कृति में कलाकार ने माचिस की तीलियों व गोद का प्रयोग कर झूमर का रूप दिया है फिर उन्हें छत पर लटकाया है, इस कृति में कलाकार ने हिन्दू रिति रिवाज के तत्वों के माध्यम से सृजन एवं विनाश के रूप को दर्शाया है।

The Nymph and the Adult –

प्रस्तुत अधिष्ठापन कृति को कलाकार ने नई दिल्ली में प्रदर्शित किया था। इसी अधिष्ठापन के लिए उन्हें अवार्ड भी प्राप्त हुआ। इस अधिष्ठापन में 2000 के करीब कोक्रोच जो दिखने में वास्तविक थे, कला वीथिका की दीवार व जमीन पर इस प्रकार प्रदर्शित किये, जैसे कि एक दूसरे पर हमला कर रहे हो।

Dream a Wish Wish a dream -

एशिया की सबसे बड़ी झुग्गी बस्ती मुम्बई के धारावी क्षेत्र को कलाकार ने एल्युमीनियम पन्नी टुकड़े धातु, प्लास्टिक और हार्डवेयर की विभिन्न वस्तुओं के द्वारा दर्शाया है कुछ ही मीटर के दायरे में एक के ऊपर एक मकान, झुग्गी, झोपड़ी तथा शहर के अलग–अलग वातावरण का विभाजन किया है, इस कृति से आज के औद्योगिकीकरण, आधुनिकता एवं स्थान के अभाव का सचित्र चित्रण किया है। मुम्बई महानगर आधुनिक समय के सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक समस्या और इसे वर्ग संघर्ष, विस्थापन, पहचान, गरीबी, अराजकता को अपने भीतर समाहित करता है। सभ्यता का दृश्य, खोये हुए घर, शहर और समाज के विषय में स्वप्नों का दुःस्वप्नों में परिवर्तन, जीवित व्यक्तियों का विवरण, अप्राकृतिक स्थान को एक विशेष यथार्थवादी रूप में दर्शाया गया है, इन झुग्गी, झोपड़ियों के प्रवासी जीवन की झलक को कोई भी पढ सकता है। यह उन श्रमिकों की कहानी है, जिन्हें दमनकारी ताकतों द्वारा दबाया जाता है जबकि राज्य के विकास में इनका पूर्ण योगदान रहता है।

कलाकार ने इस अधिष्ठापन कृति में उस घटना को दर्शाया है जब दूर शहरों से श्रमिक मुम्बई आकार अपने सपनों को पूरा करना चाहते हैं परन्तु वैसा नहीं हो पाता बल्कि रहने तक को जगह नसीब भी नहीं हो पाती और फिर झुग्गी–झोपड़ियों में कष्ट भरी जिन्दगी को बिताना पड़ता है।

Glass House –

हेमा उपाध्याय ने इस कृति के माध्यम से प्रवासन, अलगाव और विस्थापन की शहरी स्थिति को स्वयं के माध्यम से दर्शाया है। प्रकृति, संस्कृति, औद्योगिकीकरण, वास्तविक स्थान आदि को रूपक के माध्यम से प्रस्तुत किया है। शीशे का घर जो समकालीन वास्तुशिल्प की सामग्री है जहाँ एक ओर शीशा आकर्षक और पारदर्शी होता है, वही दूसरी ओर नाजुक तथा शीघ्र ही टूटने वाला होता है। आज के युग

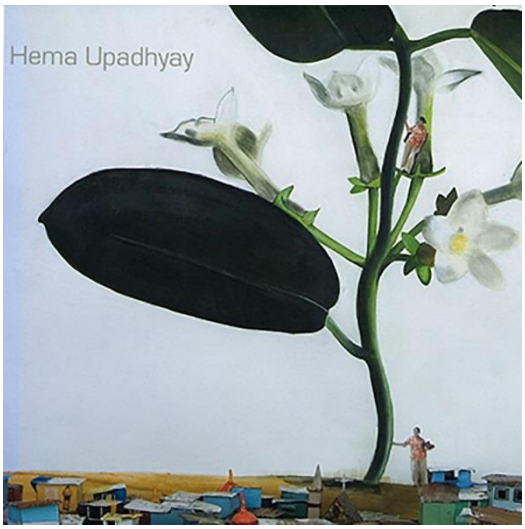

में पारदर्शी शीशे का प्रयोग आवासीय एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठानों में बहुतायत से किया जा रहा है। एक ही दफ्तर में अलग–अलग केबिन भी पारदर्शी शीशे के द्वारा बनाये जा रहे हैं। जिससे व्यक्ति को कार्य करने में सुविधा रहे। कलाकार ने इस अकेलेपन और एकांत को दर्शाने के लिए शीशे को रूपक के रूप में प्रयोग किया है, जो समकालीन मानवीय स्थिति का भ्रम है। उनके दृश्य समाजशास्त्रीय, विकास तथा मानवीय दुर्दशा की पटकथा लिखते हैं। उनकी कृतियां धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक दुविधाओं की एक श्रृंखला द्वारा गठित है। शहर में रहना, उसे सुनना, उससे बात करना और सबसे अधिक घूमकर इसके स्थानों का अनुभव करना तथा उससे संबंध बनाना उन्होंने कृतियों में दर्शाया है। हेमा उपाध्याय शहर में रहती थी, लेकिन वहां की घिसी पिटी बातों का विरोध करती थीं और पलायन बाद पर टिप्पणी भी करती थी। उनके अनुभावात्मक संवाद जहां अतीत एवं वर्तमान को एकाकार्थ करते हैं वहीं महाकाव्य, अंतरंग और लौकिक को समाहित करते हैं, जो शहरी विन्यास में निहित होकर स्वतः वार्तालाप के रूप में क्रियाशील हो जाते हैं। उनके इस कार्य में सामाजिक एवं राजनैतिक मुद्दे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं, कलाकार ने अपनी अनूठी शैली में एक्रेलिक, ग्वॉश, सूखे पेस्टल, आर्च पेपर, शीशा तथा कुछ अन्य वस्तुओं का प्रयोग किया है। एक स्थान पर एक घर के अन्दर एक आदमी भी दर्शित है साथ ही अलग–अलग स्थान पर मंदिर व चर्च को भी दिखाया है। एक ओर कलाकार ने स्वयं को तने को पकड़े हुए खड़े हुए दर्शाया है, वहीं दूसरी ओर टहनी पर खड़े हुए दर्शाया है।

Killing Site –

हेमा उपाध्याय का जीवन स्थानांतरण से प्रारम्भ हुआ है, उनके माता–पिता 1940 ई0 में विभाजन के उपरान्त पाकिस्तान से भारत आए और हेमा उपाध्याय स्वयं बड़ौदा के छोटे से कस्बे से 1990 ई0 में मुम्बई आयी; इसलिए उनकी कलाकृतियाँ बड़े शहर से छोटे शहर के स्थानान्तरण से संबंधित हैं और शहरी अराजकता दिखाई देती है, उनका कार्य किलिंग साइट उन बदलाव के विषय में बताता है जो भारत में बड़े पैमाने पर प्रवासियों के आश्रय स्थल मुम्बई जैसे महाशहरों में हो रहे हैं, मुम्बई में सांस्कृतिक परिवर्तनों की बाढ़ है जो पिछले कुछ वर्षों बड़ी संख्या में उभरे मोलों के कारण आया है। 1990 की दशक की बड़े हिस्से पर निर्मित हुए मिलों के बंद होने से मुम्बई में रहने वाले हजारों प्रवासियों की नौकरी चली गई जिससे बड़ी मात्रा में गरीबी पैदा हुई सामाजिक मुद्दों और प्रवासन विचार इस कलाकृति के पीछे हैं। इससे संबंधित सभी यादें इस कलाकृति से जुडी हुई हैं। कलाकार ने एक्रेलिक रंग, ग्वाश, ड्राई पेस्टल, प्लास्टिक

शीट, एमशील, रेजिन हार्डवेयर सामग्री अन्य वस्तुऐं का इस्तेमाल करके इस अधिष्ठापन कृति का निर्माण किया है।

उदात्त विचारों को समाहित करता है। हेमा उपाध्याय प्रवासन और विस्थापन की अवधारणा के विषय में अपने विचारों को विशेषकर मुम्बई शहर के परिदृश्यों का चित्रण किया है, ये कृतियाँ दर्शकों को वर्षों से अलग–अलग स्तरों पर आकर्षित कर रही है, जैसे कि 2005 में लिलि में प्रदर्शित किये गये कार्य में प्रवास की रणनीति का सामना कराया, वहीं 2008 में टोक्यो में मोरी संग्रहालय में प्रदर्शित कलाकृति में दो अलग–अलग शहरों की तुलना करने पर मजबूर किया।

हेमा के इंस्टोलेशन का उद्देश्य तंग प्रवासी जीवन स्थितियों को सामने रखना है, हेमा समाज में फैली अनियमितता को बताना चाहती है, वह अपने दर्शकों को समाज में फैली अनियमितता गरीबी व भुखमरी का चित्रण कर आइना दिखाने के प्रयास में सफल हुई है, उनकी अधिष्ठापन कृतियाँ स्वयं बोलती हैं, ये स्वयं इतने प्रभावशाली एवं सूक्ष्मता विषय को रखते हैं। हेमा इस बात पर विश्वास करती है किसी भी शहर को चित्रण विषय बनाने से पूर्व शहर के परिदृश्य को समझ लेना चाहिए और अपनी कृतियों में इस बात को सिद्ध भी किया। प्रवासी मजदूर बड़े शहरों में अपनी जिन्दगी को बेहतर बनाने के उद्देश्य से कम मूल्य के घरों में रहते हैं इसीलिए अनजाने ही वर्ग प्रणाली में विभाजन हो जाता है और यहूदी बस्ती जैसी संरचना हो जाती है। यह प्रतिष्ठापन यादों और विस्थापन का अनूठा संगम है। यह अधिष्ठापन कार्य स्मृतियों एवं प्रवास का उत्तम संयोजन है। कलाकार ने इस कलाकृति में एल्यूमीनियम शीट, कार स्क्रैप, इनेमल पेंट, प्लास्टिक शीट, एम–सील, रेजिन एवं हार्डवेयर सामग्री का उपयोग किया है।

निष्कर्ष :

हेमा उपाध्याय समकालीन कला के प्रति समर्पण और कला क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने के अपने प्रयास के कारण उन्हें भारतीय कला जगत के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखती है। वह एक प्रतिभाशाली थी, उन्होंने अपनी कृतियों में विशेषतया हिंसा एवं सौन्दर्य को एक साथ दृषित करने का प्रयास किया है। कलाकार ने मुख्यतः अपनी कृतियों में मुम्बई के परिदृश्य एवं घटनाओं का उपयोग किया है। इसके साथ ही वह अपने अधिष्ठापन कार्यों में कला के अर्थों को दिखाने के लिये स्वयं के पारिवारिक एवं व्यक्तिगत घटनाओं का सहारा लेती थी। उन्होंने जीवन के विभिन्न पक्षों का मार्मिक चित्रण किया है। जीवन के रोजमर्रा के अनेक दृश्यों का अद्भुत संसार रचा है। मुम्बई के निसर्ग सुन्दर वातावरण की उत्प्रेरणा से चित्र भूमि तैयार कर कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान कर अमर हो गई।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. Palapati, Megha, 2007, artist's Biographics'. New Narrative, P-116.
2. Seid, Betty, 2007, Looking inward narratives of the self, New narratives, P-51.
3. Nenault Julian, 2007 "India in France" (International Report) Art India Vol. XII/Issue/Quarter-I, P-105.
4. https://www.artsy.net/artwork/hema-upadhyay-killingsite
5. https://www.grosvenongallery.com/exhibitions/304-hema-upadhyay-the-glass house/overview
6. https://en.m.wikipedia.org/wiki/file:Hema-upadhyay-dream-a-wish-wish-a-dream-wam.jpg